टिप्पणी

5

विशेष बल

इस अध्याय में आप विशेष बलों द्वारा किए जाने वाले विशेष कार्यों, इनके लिए आवश्यक प्रशिक्षण तथा इन बलों के महत्व के बारे में जानेंगे।

युद्ध के दौरान समुद्र, आकाश और थल पर अनेक प्रकार के ऐसे कार्य होते हैं जिनसे विशेष बल दुश्मन के क्षेत्र में उनकी जानकारी के बिना विनाशक कार्यों में लगे रहते हैं। विशेष बलों का आरम्भ बीसवीं सदी के प्रारम्भिक वर्षों में हुआ, जब द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान युद्ध क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्यों की वृद्धि हुई और युद्ध में संलग्न प्रत्येक प्रमुख सेना ने अपनी सेना पंक्ति के पीछे विशेष कार्रवाइयों के लिए कई संगठन खड़े किए।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के बाद, आप :

- वैश्विक स्तर पर विशेष बलों के इतिहास की व्याख्या कर सकेंगे;
- भारतीय विशेष बलों के इतिहास को स्पष्ट कर सकेंगे;
- अन्य विशेष बलों के ढांचे का विस्तृत वर्णन कर सकेंगे।

5.1 वैश्विक स्तर पर विशेष बलों का इतिहास

विशेष बल सेना की इकाईयाँ ही हैं जिन्हें विशेष कार्रवाइयाँ करनी होती हैं। सैनिक गतिविधियों के रूप में की जाने वाली विशेष कार्रवाइयों को निश्चित, संगठित, प्रशिक्षित और हथियारों से लैस बलों द्वारा चलाया जाता है और ये बल चुने हुए लोगों, अपारंम्पारिक युक्तियों, तकनीकों का प्रयोग करके अपने कार्य करते हैं। प्राय: विशेष बलों को जासूसी करने वाले संगठन के लिए काम करने वाला समझ लिया जाता है, जो भिन्न-भिन्न अधिकारियों के मातहत रह कर विभिन्न प्रकार के कौशल प्रयोग करके, अपनी प्रायोजक यूनिट और गतिविधि को गुप्त रखते हैं। कभी-कभी विशेष सैनिक इकाईयों का विशेष कार्य करने के लिए प्रयोग किया जाता है और कभी-कभी विशेष बलों को जासूसी करने वाले संगठनों के गुप्त कार्यों करने के लिए भेज दिया जाता है। अत: विशेष बल न केवल विशिष्ट होते हैं अपतु विशेष भी होते हैं क्योंकि उन्हें ऐसे लड़ाका कार्यों और मिशन पूरे करने होते हैं जो सामान्य बल नहीं कर सकते अथवा खतरे और कीमत की दृष्टि से उनके लिए उपयुक्त नहीं होते।

जब युद्ध में पारम्परिक तरीकों के स्थान पर 'मारो और भागो' की नीति से अव्यवस्था फैलाने का उद्देश्य होता है, तब विशेष बलों ने युद्धों के इतिहास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विशेष बलों की अन्य भूमिकाओं में दुश्मन की टोह लेना, शत्रु के बारे में अनिवार्य गुप्त सूचनाएं प्रदान करना तथा अनियमित बलों, उनके संगठनों और गतिविधियों के साथ लड़ना शामिल है।

ब्रिटिश आर्मी ने अपनी सीमा पर युद्धों के दौरान दो विशेष बलों का प्रयोग किया: पहला 1846 में गठित कॉपस आफ गाईड्स और दूसरा गुरखा स्काऊट्स (यह बल 1890 के दशक में गठित किया गया और पहली बार 1897-98 में तीरह अभियान के दौरान इसका एक विलग इकाई के रुप में प्रयोग किया गया था)। द्वितीय बोअर युद्ध (1890-1902) के दौरान ब्रिटिश आर्मी को विशेष बलों की अधिक आवश्यकता अनुभव हुई।

इस भूमिका में लवेटा स्काऊट्स (Lovat Scouts) जैसी स्काऊटिंग यूनिटों को लिया गया जो स्काटिश हाइलैण्ड रेजीमेण्ट का भाग थीं और अभ्यस्त जंगली निशानेबाज, युद्ध क्षेत्र की शिल्पकार और युद्ध की युक्तियों के जानकार थीं। यह यूनिट 1900 में लार्ड लवेट द्वारा बनाई गई थी, जो पहले लार्ड रॉबर्ट के नेतृत्व में चीफ आफ स्काऊट्स अमरीकी मेजर फ्रेडरिक रॅसल को रिपोर्ट करती थी। युद्ध के बाद लवेट के स्काऊट औपचारिक रूप से ब्रिटिश आर्मी की पहली निशानेबाज यूनिट बन गई। इसके साथ ही 1901 में बने बुशवेल्ट कारबाइनर्स को युद्ध करने वाली आरंभिक अपारंम्परिक यूनिट के रुप में देखा जा सकता है।

5.2 भारतीय विशेष बलों का इतिहास

भारतीय विशेष बलों का इतिहास ब्रिटिश इन्डियन आर्मी द्वारा पैराशूट बटालियन तैयार करने और बाद में 1952 में पैराशूट रेजीमेण्ट बनाने के इर्द-गिर्द घूमता है। रेजीमेण्ट ने सफलतापूर्वक कई हवाई कार्रवाईयाँ तथा सीमा पार कमांडो हमले किए। भारतीय सेना के पास कमाण्डो बटालियनें थीं। बाद में इन यूनिटों को विशेष बलों का नाम दिया गया और शत्रु की स्थिति के पीछे रह कर कुछ विशेष कार्य करने का काम सौंपा गया।

1971 के युद्ध में विशेष बलों को एक नौ सेना घटक की आवश्कता तब महसूस हुई जब उस समय के पाकिस्तान और वर्तमान में बंगला देश के कोक्स बाजार में एक जल-स्थलीय लैंडिग की योजना बनाई गई (आपरेशन जैक पाट)। इस अनुभव के बाद भारत में अमेरिका के SEALS (सील्स) की तर्ज पर मेरीन कमाण्डो तैयार किए गए।

पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की हत्या के बाद गृह मंत्रालय के अन्तर्गत एक बल गठित करने का निर्णय लिया गया। अति महत्वपूर्ण व्यक्तियों की सुरक्षा के साथ यह सोचा गया कि तैयार किया गया यह नया बल, आतंकवाद के विरुद्ध, एन्टी हाइजैकिंग (हवाई जहाज अगवा करने के विरुद्ध) और अपहरण के विरुद्ध भी काम आएगा।

तदोपरान्त 1984 में राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड (NSG) का गठन किया गया। राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड को विशेष बल से काटकर बनाया गया और इसके गठनकर्ता सहित सभी सदस्य भारतीय थल सेना से ही लिए गए थे।

2004 में भारतीय वायु सेना में गठित विशेष बल 'गरुड़' युनाइटिड किंगडम की रायल एयर फोर्स रेजीमेण्ट (RAFR) के समान था, जिसका गठन द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान 'तूफानी आक्रमण' के प्रत्युतर में किया गया था। 'राफर' की भांति गरुड़ का काम भी मैदानी लड़ाई में सेना की सहायता के लिए शत्रु के क्षेत्र में घुस कर कार्रवाई करने के लिए किया गया था।

5.3 अन्य विशेष बलों का ढांचा (संरचना)

विशेष बलों के ढांचें में नव गठित 'आर्म्ड फोर्सिस स्पेशल फोर्सिस डिवीजन' (AFSFD) को शामिल किया गया है, जो एकीकृत रक्षा स्टाफ (Integrated Defence Staff) के अधीन काम करेगा। इस व्यवस्था में सेना, नौ सेना और वायु सेना के सभी विशेष बल एक कमाण्डर के अधीन होते हैं। वर्तमान में इस नए डिवीजन (AFSFD) का मुखिया सेना का एक मेजर जनरल है। भारतीय सशस्त्र बलों के विभिन्न विशेष बलों का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया गया है।

5.3.1 पैराशूट रेजीमेण्ट

पैराशूट रेजीमेण्ट में PARA और PARA (SF) (विशेष बल) शामिल होते हैं, जो देश में विभिन्न प्रकार की विशेष कारवाईयाँ करने वाली रेजीमेण्ट हैं। यह राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड (NSG), सुरक्षा गार्ड (SG), राष्ट्रीय राईफल्स की कमाण्डो बटालियनों की विशेषज्ञ यूनिटों को योगदान देने वाली अकेली सबसे बड़ी बटालियन भी है। इस रेजीमेण्ट का अपना अलग प्रशिक्षण केन्द्र है, जहां भारतीय सेना के क्षेत्रीय भर्ती केन्द्रों से जवान भर्ती किए जाते हैं।

इस यूनिट का 1966 में भारतीय सेना द्वारा गठन किया गया। 1965 में भारत- पाकिस्तान युद्ध के दौरान उत्तर भारत की थल सेना यूनिटों से लिए गए कुछ वालंटियर्स ने मेजर मेघ सिंह के नेतृत्व में ब्रिगेड आफ गार्ड्स के रुप में शत्रुओं की पंक्ति के पीछे रह कर कार्रवाईयां की थी। इस बल के प्रदर्शन ने अधिकारियों को इनके योगदान पर दृष्टि डालने तथा एक नया बल गठित करने की आवश्यकता को अनुभव करने के लिए विवश किया।

नए बल के केन्द्र के रुप में उस समय के विसर्जित 'मेघदूत बल' के वालंटियर्स को लेकर ब्रिगेड आफ गार्ड्स के एक अंग के रुप में एक बटालियन तैयार की गई। पैराट्रुपिंग का, कमाण्डो युक्तियों का एक अभिन्न अंग होने के कारण इस यूनिट को पैराशूट रेजीमेण्ट में परिवर्तित कर दिया गया। जुलाई 1966 में गठित नौवीं बटालियन, 'द पैराशूट बटालियन (कमाण्डो)' पहली विशेष कार्रवाई यूनिट थी। पैराशूट बटालियन के विशेष बलों PARA (SF), की सूची निम्न लिखित है :

- 1PARA (SF) (1961 में गठित) को विशेष बल में परिवर्तिन कर दिया गया।
- 2PARA (SF) (Ex-3 Maratha L.I) को विशेष बल में परिवर्तित कर दिया गया।
- 3PARA (SF) (Ex-1st Kamaon) को विशेष बल में परिवर्तित कर दिया गया।
- 4PARA (SF) (1961 में गठित) को विशेष बल में परिवर्तित कर दिया गया।

- 9PARA (SF) (1966 में गठित) भारतीय सेना की विशेष बलों को समर्पित पहली इकाई)
- 10PARA (SF) (1967 में गठित)
- 11PARA (SF) 2001 में गठित
- 21PARA (SF) 1996 में गठित

5.3.2 राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड (NSG)

'राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड' गृह मंत्रालय के अधीन गठित विशेष बल की एक इकाई है। 1984 में 'ब्ल्यू स्टार आपरेशन' के अनुभव के दृष्टिगत 'राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड' का गठन किया गया। गठन के बाद 1986 में इसका पंजाब और जम्मू-कश्मीर में प्रयोग किया गया। हालांकि इस बल का नाम केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बल की सामान्य नामावली के अन्तर्गत नहीं रखा गया।

इसके पास विशेष बल का दायित्व है और इसके द्वारा कार्रवाई करने की योग्यता भारतीय सेना के विशेष कार्य समूह (SAG) द्वारा प्रदान की जाती है। 'राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड' पुलिस घटक के रूप में 'विशेष रेंजर समूह' के केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बलों और राज्य पुलिस के जवान से लिए जाते हैं जो अति विशिष्ट जनों की सुरक्षा भी करते हैं। 'राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड' के जवानों को मीडिया में 'ब्लैक कैट' के नाम से संबोधित किया जाता है, क्योंकि वे काले रंग की वर्दी पहनते हैं, जिस पर बिल्ली (कैट) का चिन्ह अंकित होता है।

5.3.3 गरुड़

'गरुड़, भारतीय वायु सेना की एक यूनिट है, जिसे फरवरी 2004 में शुरू किया गया। मूलत: ये वायु सेना के संस्थानों की आतंकवादी हमलों से रक्षा करते हैं। 'गरुड़' 72 सप्ताह का प्रोबेशन प्रशिक्षण कोर्स पूरा करते हैं जो भारतीय विशेष बलों के प्रशिक्षण कोर्सों में सबसे लम्बा कोर्स है। एक प्रशिक्षु को 'गरुड़' के रुप में कार्य करने योग्य बनने में लगभग 3 वर्ष के प्रशिक्षण का समय लगता है। 'गरुड़ों' की विविध जिम्मेवारियां होती हैं।

हवाई अड्डों और प्रमुख सम्पतियों की रक्षा का आधार सुरक्षा बल होने के साथ ही गरुड़ों कुछ श्रेष्ठ यूनिटों को आर्मी पैरा कमाण्डो तथा नेवल मारकोस की भांति दुश्मन की पंक्ति के काफी पीछे जाकर कार्रवाई करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। संघर्ष के समय 'गरुड़' योद्धाओं की खोज और बचाव, दुश्मन की रक्षा पंक्ति की पीछे गिरा दिए गए एयरमैनों और अन्य बलों के जवानों को बचाने, शत्रु की वायु रक्षा को भेदने, राडार नष्ट करने, मिसाइल और युद्ध सामग्री का मार्गदर्शन करने तथा हवाई कार्यवाही करने में सहयोग देने जैसे कई कार्य करते हैं।

5.3.4 मेरीन कमाण्डोस

मारकोस, (पूर्व में जिन्हें मेरीन कमाण्डो फोर्स कहा जाता था) भारतीय नौ सेना का एक विशेष बल है, जिसका गठन जल-स्थलीय युद्ध, सीधे आमने-सामने लड़ना, आतंकवाद, सीधे

कार्यवाही, विशेष टोही-अभियान, अपारम्परिक युद्ध, अपहत बचाव, लोगों की रक्षा, युद्ध में खोजने और बचाने, विषम युद्ध, जल स्थली टोह और हाइड्रोग्राफिक टोह जैसी विशेष कार्यवाहियों को करने के लिए किया गया है।

मारकोस कमाण्डो बल को समुद्री वातावरण में विशेष कार्यवाहियाँ करने के लिए गठित, प्रशिक्षत और साधन सम्पन्न किया गया है। मेरीन कमाण्डोस का छोटा नाम मारकोस है। अपने तीस वर्षों में इसने अनुभव प्राप्त किया है और व्यवसायिक ख्याति अर्जित की है। मारकोस प्रत्येक प्रकार के युद्ध क्षेत्र में कार्यवाहियाँ करने में सक्षम हैं लेकिन समुद्री कार्यवाही करने में विशेषज्ञ होते हैं। जेहलम नदी और 65 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैली वूलर झील के माध्यम से उन्होंने जम्मू और काश्मीर में कई कार्रवाईयाँ की हैं। मारकोस के कुछ जवानों को आतंकवाद विरोधी कार्यवाहियों के लिए आर्मी स्पेशल फोर्सेस के साथ भी लगाया गया है।

मेरीन कमाण्डोस का पहला जत्था फरवरी 1987 में तैयार हुआ था। इस यूनिट का सबसे अलग होना इसकी थल, जल और नभ में कार्यवाही करने की क्षमता के कारण है। समुद्री वातावरण में विशेष कार्रवाईयाँ करने के लिए मारकोस को विशेष रुप से गठित, प्रशिक्षित और साधन सम्पन्न किया गया है। इस यूनिट के लोगों को कश्मीर से गोवा तक 24 घण्टे की निगरानी तथा सोमालिया में डकैती विरोधी कार्रवाईयों के लिए लगाया गया है। प्राकृतिक आपदाओं के दौरान यह यूनिट गोताखोरी और नागरिक सहायता के लिए सबसे आगे रहती है। मारकोस के प्रमुख कार्य निम्नलिखित हैं-

- शत्रु के समुद्री जहाजों पर गुप्त हमले करना, किनारों की इमारतों और शत्रु की पंक्ति के पीछे की महत्वपूर्ण परिसम्पतियों पर आक्रमण करना।
- गुप्त कार्रवाईयों सहित आक्रमण के पूर्व की गतिविधियों में सहयोग देना।
- अपारम्परिक युद्ध लड़ना।
- सेना की कार्रवाईयों में सहयोग देने के लिए निगरानी और जानकारी की खोज करना।
- गुप्त गोताखोरी से कार्रवाई करना।
- समुद्रों में बन्दी बनाए गए लोगों को बचाने की कार्रवाई करना।
- समुद्री वातावरण में आतंकवाद से लड़ने की कार्रवाई करना।

पाठगत प्रश्न 5.1

1. विशेष बलों का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

   .....

2. विशेष बलों की विभिन्न योग्यताओं/क्षमताओं का वर्णन कीजिए।

   .....

3. पहली विशेष कार्यवाही यूनिट PARA (SF) का नाम लिखिए। इसका गठन कब किया गया था?

.....

4. ब्लैक कैट्स कौन हैं? उन्हें इस नाम से क्यों पुकारा जाता है?

.....

5. 'गरुड़ों' के विभिन्न उत्तरदायित्वों का वर्णन कीजिए।

.....

6. मारकोस की भूमिकाओं को स्पष्ट कीजिए।

.....

आपने क्या सीखा

- नियमित सशस्त्र सेना डिवीजनों के अतिरिक्त शत्रु की पंक्ति के पीछे गुप्त कार्रवाई करने के लिए विशेष उद्देश्यों के लिए प्रशिक्षत जवानों को अलग से नियुक्त किया जाता है।
- द्वितीय विश्व युद्ध के अनेक देशों ने विशेष बलों का गठन किया। भारत ने भी विशेष बलों की बटालियनों जैसे-पैराशूट रेजिमेण्ट, भारतीय वायु सेना का विशेष बल गरुड़ तथा समुद्री कार्यवाहियों के लिए मारकोस यूनिट इत्यादि को गठित किया।
- ऐसे प्रत्येक बल को कठिन और विशेष प्रशिक्षण लेना होता है। ये बल शत्रु सेना की शक्ति को कम करने तथा उसे आक्रमण करने से रोकने जैसे कार्यों को करने के लिए पूर्णतः सक्षम होते हैं।

पाठान्त प्रश्न

1. भारतीय विशेष बलों के इतिहास का वर्णन कीजिए।
2. पैराशूट रेजीमेण्ट (विशेष बल) के ढांचे को स्पष्ट कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

5.1 1. विशेष बल सेना की इकाईयाँ होते हैं जो विशेष कार्रवाईयां करने के लिए प्रशिक्षित होती हैं। इनमें विशेष रूप से तैयार, संगठित, प्रशिक्षित और साधन सम्पन्न बल शामिल होते हैं इनके जवान अपारम्परिक युक्तियों, तकनीकों और उन्हें प्रयोग करने के विलग तरीकों को अपनाने में समक्ष होते हैं।

2. विशेष बलों की योग्यताएं निम्नलिखित हैं-

   क) युद्ध के वातावरण में टोह लेना और निगरानी करना

   ख) आक्रामक कार्रवाई करना

   ग) लोगों के सक्रिय सहयोग के माध्यम से अलगाव विरोधी गतिविधियों में सहयोग देना

   घ) आतंक विरोधी आप्रेशन

   ड.) भीतरघात का नाश करना

   च) शत्रु द्वारा बन्दी बनाए गए लोगों का बचाव करना

3. नौवीं बटालियन, पैराशूट रेजिमेण्ट (कमाण्डोस) पहली विशेष कार्रवाई यूनिट थी। इसका गठन जुलाई 1966 में किया गया था।

4. राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड (NSG) को प्राय: ब्लैक कमाण्डो कहा जाता है। ऐसा इसलिए कहा जाता है क्योंकि वह काली वर्दी पहनते हैं और उनकी वर्दी पर काली बिल्ली का निशान बना होता है।

5. 'गरुड़' मूल रुप से भारतीय वायु सेना की इमारतों, हवाई अड्डों और युद्ध के वातावरण में प्रमुख परिसम्पतियों को आतंकवादी आक्रमण से बचाने का कार्य करते हैं। घुसपैठ और संघर्ष के दौरान उन्हें हथियारों की व्यवस्था को भंग करने, लड़ाकों को रोकने तथा उनकी अन्य व्यवस्थाओं को भंग करने का काम सौंपा जाता है।

6. शत्रु के जहाजों के विरुद्ध गुप्त आक्रमण करना तथा शत्रु की पंक्ति के पीछे की सम्पतियों तथा किनारे की इमारतों और महत्वपूर्ण परिसम्पतियों पर आक्रमण करना।

   - जल-स्थलीय कार्यवाहियों सहित आक्रमण पूर्व कार्यवाहियों को सहयोग देना
   - अपारम्परिक युद्ध करना
   - सैनिक कार्रवाईयों को सहयोग देने के लिए निगरानी रखने और टोही मिशनों को चलाना
   - गोताखोरी की गुप्त कार्रवाईयों को चलाना
   - समुद्र में बन्दी बनाए गए लोगों के बचाव के लिए कार्यवाही करना
   - समुद्री वातावरण में आतंकवाद से लड़ना।